

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

24-जनवरी-2016 16:04 IST

बच्चों को वीरता पुरस्कारों के वितरण के दौरान प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मंत्री परिषद के मेरे साथी श्रीमती मेनका जी... गीता जी और आज जिन वीर बालकों को पुरस्कार मिल रहा है और उनके परिवारजन और सभी उपस्थित महानुभाव मैं इन सभी बालकों को हृदय से बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूँ। उनके माता-पिता का भी गौरव करता हूँ। लेकिन मैं देख रहा था कि ज्यादातर पुरस्कार पानी से जुड़ा हुआ है और कुछ जो है बिजली से जुड़ा हुआ है। शायद ये बातें होगी जो जल्दी ध्यान में आती होगी।

घटना का उतना महत्व नहीं होता है कि जितना कि उस समय उस पल उस बालक के मन में विचार कैसे आया होगा कैसे उसने कदम उठाया। हम भी देखते होंगे हमारे जीवन भी बहुत सी घटनाएं घटती होंगी लेकिन उस समय हमें ध्यान नहीं आता है कि हां इसका शायद यह हो सकता है। और इसलिए presence of mind और उसके अनुरूप Act उसी का परिणाम होता है कि किसी का साहस किसी को नई जिन्दगी देता है।

ये वो बालक है जिन्होंने उस प्रकार की बातों को कर दिखाया है। लेकिन व्यक्ति के जीवन में साहस एक स्वभाव बनना चाहिए। अगर साहस एक स्वभाव नहीं बनता है। साहस सिर्फ एक घटना रह जाती है, तो फिर समाज जीवन में जिस प्रकार के लोगों की जरूरत होती है उसकी कमी महसूस होती है। जिन बालकों ने इन बातों को किया है। हमें आज लगता होगा कि यार ठीक है कर लिया होगा। लेकिन उस घटना के संबंध और उस परिपेक्ष को देखें तो पता चलता है ये कैसे किया होगा। उस समय अगर तार याद आया उसको प्लास्टिक के स्लीपर याद आ गए, उसको करंट लगता है तो बचाना चाहिए। सारी चीज एक साथ उसके मन में आई। यही अपने आप में एक बहुत बड़ी बात होती है। वरना ठीक है कोई देखे तो कोशिश करेगा चलो मैं जरा बचा लूं। लेकिन इतनी चीजों को एक साथ जोड़ कर के सफलतापूर्वक कर लेता है, तो उसका मतलब कोई न कोई उसका मन चलता है।

सामान्य रूप से व्यक्ति बहादुर है इसलिये सहासिक होता है ऐसे जरूरी नहीं है। बहादुर होता है व्यक्ति। लड़ाई के मैदान में है तो परास्त भी कर सकता है। लेकिन जब तक भीतर संवेदना नहीं होती है साहस प्रकट नहीं होता है। किसी के लिए कुछ करने का भाव सहज रूप से स्वभाव का हिस्सा नहीं हुआ है, तो नहीं होता है और ये तब होता है जब हरेक के प्रति अपनापन का भाव हो।

हमारी आंख में कुछ गिर जाए, तो कोई सर्कुलर नहीं निकालना पड़ता है कि हाथ ऊप जाएगा, आंख के पास जाएगा और आंख को ठीक करेगा ऐसा सर्कुलर नहीं निकालना पड़ता है। लेकिन आंख में कुछ गिरा नहीं कि हाथ वहां पहुंचा नहीं उंगली ने जाकर के कुछ न कुछ आंख की मदद की नहीं ...क्यों करते हैं क्योंकि अंगा अंगी भाव होता है। शरीर का एक अंग दूसरे अंग के साथ इतना आत्मीय रूप से जुड़ा होता है कि सहज रूप से शरीर का दूसरा अंग Act करता है।

समाज जीवन में भी मानव जात के प्रति, समाज के प्रति, प्रकृति के प्रति जब ये अंगा अंगी भाव होता है। अपनत्व का भाव होता है। मैं इस समुद्र का एक हिस्सा हूं तब जाकर के उसके लिए कुछ करने की प्रेरणा पैदा होती है और वो साहस में परिवर्तित होकर के स्थितियों को बदलती है। इन बालकों ने जो काम किया है मैं उसके लिए उनको बधाई देता हूँ। लेकिन मैं चाहूंगा कि यही एक तस्वीर, यही एक घटना, वही उनकी जिन्दगी के लिए सबकुछ नहीं हो जाना चाहिए वरना एक ग्लैमर आ जाता है, वाह-वाही हो जाती है। घर में मेहमान आते हैं तो मां-बाप भी पहले दस मिनट यही बात बताते रहते हैं। वो मेहमान चार बार आएगा तभी वही बात बताते रहते हैं। तो वह स्वाभाविक भी है। लेकिन कभी कभी ये विकास यात्रा के लिए रुकावट भी बन जाती है।

मैं नहीं चाहूंगा कि इन बालकों के जीवन में ये पुरस्कार, ये सम्मान, ये गौरव गाथाएं, ये घटनाएं वहीं पर रुक जाएं। उसकी जिन्दगी को रोक देना उसकी जिन्दगी निरंतर नई ऊंचाइयों को पार करनी चाहिए। और जो पुस्तक का विमोचन हुआ है। वो उस बात को लेकर के संग्रहित किया गया है के उन बालकों को पुरस्कार तो मिला, बाद में क्या हुआ। इस पुस्तक में उन बातों को खोजकर के रखा गया है। ये मैं समझता हूँ सबसे बड़ा संदेश है कि जीवन में एक पल थी उस पल में कुछ कर दिखाया, लेकिन ये पल ही जिन्दगी नहीं है। हजारों करोड़ों उन पल से जिन्दगी बनती है। उस यात्रा का पूरा खाका इस

किताब में है।

मुझे विश्वास है कि बालक और उनके परिवारजन बाकी लोग भी ऐसे बालकों की तरफ उनका ध्यान जाएगा कि जिसने अपने बचपन में कुछ किया था। लेकिन उसने निरंतर कुछ करता रहा था। जीवन के कुछ कालखंड में जब पहुंचा तो अपने पैरों पर खड़े होकर के उसने समाज के लिए क्या किया वो सारी बातें इस किताब में हैं। मैं उन सभी बालकों को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। धन्यवाद।

अतुल तिवारी/ हिमांशु सिंह/ सुरेन्द्र कुमार/ शौकत अली/ आरआरएस

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

14-January-2016 20:00 IST

Text of PM's address at the Amazing Indians Awards Event

उपस्थित सभी महानुभाव

Amazing India and Amazing Indians ...मैं Times Now को अभिनंदन करता हूँ कि समाज के उन हीरो की परख करने की उन्होंने कोशिश की है जो कभी खुद के लिए चमकते नहीं हैं। ये वो हीरो हैं, जैसा हीरो का स्वभाव रहता है, खदान से निकल कर किसी के शरीर पर धारण करने तक की उसकी यात्रा बहुत ही पीड़ादायक होती है, बहुत ही कष्टदायक होती है। अनेक मुसीबतों से उसे गुजरना पड़ता है और तब जा करके वो किसी के शरीर पर चमकता है। ये वो हीरो हैं जहाँ समाज, संसार चमक को प्राप्त करें उसके लिए वे इन्हें झेलते जाते हैं, जूझते जाते हैं और कुछ कर गुजर करके संतोष पाते हैं।

हमारे देश का दुर्भाग्य रहा है कि हमारे यहां जो कुछ भी लिखा जाता है पिछले दो सौ, ढाई सौ, तीन सौ साल में देखेंगे तो ज्यादातर राज परिवारों की बातें, राजकर्ताओं की बातें, राजघरानों की बातें, उनकी आदतें, उनकी दिनचर्या, यही बातें समाज के सामने आती रहती थीं। इस देश को गुलाम रखने के लिए ये सोची-समझी रणनीति का भी हिस्सा था और उसके कारण ध्यान इस चमक-दमक के आसपास ही रहता था। अंधेरे में ओझल भी एक दुनिया होती है, मुसीबतों के बीच भी मूल्यों के लिए जूझते रहने वाले लोगों की एक परम्परा होती है और उस तरफ बहुत कम ध्यान जाता है।

प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों को पढ़ते हैं तो ध्यान में आता है कि किस-किस प्रकार से लोग जीवन को संवारते थे, सिर्फ जीवन को जीते थे ऐसा नहीं है, जीवन को संवारते थे। और इसलिए हमें अपने-आप की शक्ति को भी अगर महसूस करना है, हमें अपने-आप को भी अगर पहचानना है तो अंधेरे में ओझल जो लोग हैं उनको देखने से कभी हम अपनी स्थिति को पहचान पाते हैं। कुछ लोगों की सोच है कि अगर सुविधाएं हैं, व्यवस्थाएं हैं, सानुकूल माहौल है तभी कुछ किया जा सकता है। ऐसी सोच वाला बहुत बड़ा वर्ग है और मैं उनको हमेशा कहता हूँ कि अगर आपको नींद नहीं आती है Five star hotel में आपके लिए बढ़िया से बढ़िया कमरा बुक कर दिया जाए, आप चाहें उतना temperature हो, आप चाहें ऐसा गद्दा हो, आपको पसंद आए ऐसा music हो, उसके बावजूद भी नींद की गारंटी नहीं है।

अवसर, सुविधाएं, व्यवस्थाएं हमेशा समाधान देती हैं ऐसा नहीं है। अगर आपके भीतर कोई आग है, भीतर कोई spark हो वो परिस्थितियों को परास्त करने की ताकत रखता है और दुनिया में जिन-जिन लोगों ने कुछ किया है अगर उनकी तरफ देखें तो ज्यादातर वो लोग हैं जिन्होंने जिंदगी में काफी शक्ति जीवन से जूझने के लिए खपाई है और उसके बाद भी कुछ दे करके गए हैं। और दुनिया के किसी भी इतिहास के किसी भी गाथा के क्रम को देखेंगे, हर बात में कहीं न कहीं समाज जिनको छोटे लोग मानता है, बड़े लोगों की नजर में जो छोटे लोग होते हैं, उनका कितना बड़ा योगदान होता है। पूरी रामायण हम देख लें, राम, लक्ष्मण, सीता सब कुछ पढ़ लें, लेकिन हम उस गिलहरी को कभी नहीं भूल सकते कि जिसके बिना, जिसके काम को राम को

भी सराहना पड़ा था कि जो राम-सेतु बनाने के लिए अपनी कोशिश कर रही थी। पूरी रामायण को भूल जाएं लेकिन शबरी को नहीं भूल सकते। श्रीकृष्ण के कई रूप याद आते होंगे लेकिन सुदामा को नहीं भूल सकते। उन ग्वालों को नहीं भूल सकते। छत्रपति शिवाजी इतनी बड़ी दुनिया, लेकिन छोटे-छोटे वो मालवे जो कभी सिंहगढ़ जीतने के लिए जिंदगी खपा देते थे, इसको कभी भूल नहीं सकते। पंज-प्यारे, गुरू परम्परा को याद करें, वो पंज-प्यारे कौन थे, सामान्य लोग थे। एक महान परम्परा को उन्होंने जन्म दे दिया। छोटे-छोटे लोग इतिहास बदल देते हैं, समाज की सोच बदल देते हैं।

हमारे देश का ये दुर्भाग्य रहा है कि आजादी के बाद भी हमारी नजरें राज-व्यवस्थाओं पर टिकी हुई हैं, राज-नेताओं पर टिकी हुई हैं और कभी-कभी लगता है कि आवश्यकता से अधिक उनको प्रधान्य दिया जाता है। जितना उनको देना चाहिए उतना देना तो समझ सकते हैं लेकिन हम देखते हैं आवश्यकता से अधिक दिया जाता है। एक टीचर जिसने अपने जीवनकाल में दो सौ अच्छे नागरिक दिए हों, जिसमें डॉक्टर हों, इंजीनियर हों, साहित्यकार हों, उस टीचर का किसी चौराहे पर नाम नहीं होता है, उसके नाम का कोई रास्ता नहीं होता है। लेकिन एक corporater बन जाए तो देखते ही देखते उसके नाम का रास्ता भी बन जाता है, उसकी सड़क बन जाती है, चौराहा बन जाता है, कभी-कभी पुतला भी लग जाता है।

समाज के लिए यह जीने वाले लोग जो राजनीतिक ताम-झाम से काफी दूर हैं, उनकी संख्या करोड़ों में है। हम पूरे हमारे कृषि जगत को देखें। कृषि जगत को ताकत जितनी laboratory से मिली है या वैज्ञानिकों से मिली है, उससे ज्यादा गांव के सामान्य किसान के नित्य निरंतर प्रयोगों से निकली हुई है। लेकिन उस तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता है। समाज की शक्ति को पहचानना, समाज की शक्ति को जोड़ना समाज की शक्ति के आधार पर राष्ट्र शक्ति को उजागर करने का प्रयास यही अंतिम ताकत के रूप में उभरता है। और इसलिए जिन्होंने कुछ न कुछ किया है। विपरीत परिस्थितियों में जी करके दिखाया है या विपरीत परिस्थितियों के बाद भी औरों के लिए जीना सिखाया है। जिनका जीवन स्वयं में अपने आप में एक उदाहरण बन गया। एक दीप से जलते दीप हजार। यह जो ताकत खड़ी की है, ऐसे ही रत्नों का मुझे आज दर्शन करने का सौभाग्य मिला है। और ऐसे अनगिनत लोग हैं, हिंदुस्तान के हर कोने में अनगिनत लोग हैं। उनकी शक्ति को हम कैसे पहचानें?

भारत की जो मूल सोच है वो तेन त्यक्तेन भुंजीथा, यह उसकी मूल सोच है। त्याग उसकी मूलभूत चिंतन का हिस्सा है। और उसी में से इस प्रकार के जीवन निर्माण होते हैं। यह जीवन औरों को प्रेरणा देते हैं। इन सबकी अपनी-अपनी एक कथा है, अपनी-अपनी विशेषता है। और आज इस कार्यक्रम के बाद बहुतों का उन पर ध्यान जाएगा। कुछ और करने का हौसला उनका बुलंद होगा। एक कमी हमेशा महसूस होती है कि इस प्रकार का जीवन जीने वाले लोग अपने जीवन में तो वो बड़े संतुष्ट होते हैं, क्योंकि वो स्वांतः सुखाय करते हैं। किसी ने तुलसी दास जी को पूछा था के आप यह सब क्यों कर रहे? तुलसीदास का सीधा-सीधा जवाब था भाई मुझे इसमें आनंद आता है इसलिए मैं कर रहा हूं। यह करने के बाद भी शायद दुनिया उसको स्वीकार करेगी, देखेगी यह मेरा विषय नहीं है। मैं स्वांतः सुखाय करता हूं, अपने संतोष के लिए करता हूं। यह वो लोग हैं जो अपने सुख के लिए संतोष के लिए यह किए बिना वो रह नहीं सकते यह करेंगे तब उनके मन का दुख भी दूर होगा, इस ऊंचाई को प्राप्त करते हैं, तब जा करके करते हैं। और इसलिए इन महान मूल्यों को हम कितने उजागर करें, कैसे उजागर करें, इन मूल्यों का हम जतन कैसे करें? और सामान्य से सामान्य व्यक्ति को उसकी प्रेरणा कैसे दें। ऐसे अवसरों से कोई ताकत उभरकर आती है। मैं फिर एक बार उन सभी रत्नों को वंदन करता हूं, अभिनंदन करता हूं और उन्होंने ऐसी मिसाल कायम की है जो सुनने, पढ़ने वाले को भी शायद प्रेरणा देने का कारण बनेगी। मैं Times Now का भी बहुत आभारी हूं कि मुझे ऐसे रत्नों के साथ उनके कार्यों को, उनके सपनों को, उनके जीवन को जानने का, उनके दर्शन का अवसर मिला। बहुत बहुत धन्यवाद।

हिमांशु सिंह / तारा / निर्मल

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

10-जनवरी-2016 18:53 IST

मुंबई में आयोजित "साहित्य सत्कार समारोह" में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जैन आचार्य रत्न सुंदरसुरीस्वकरजी महाराज द्वारा लिखित 'मारु भारत सारु भारत' (मेरा भारत श्रेष्ठर भारत) शीर्षक की पुस्तक का विमोचन करने के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

वहां उपस्थित सभी आचार्य भगवंत, सभी साध्वी महाराज साहिब, सभी श्रावतजन, कुछ समय पहले मैंने कोशिश की थी कि मेरी बात आप तक पहुंचे। लेकिन शायद टेक्नोलॉजी की कुछ सीमाएं होती हैं। बीच में व्यवधान आ गया और जैसे दूरदर्शन वाले कहते हैं, मैं भी कहता हूं रूकावट के लिए खेद है। मैं जब पुस्तकों का लोकार्पण कर रहा था। तब तक तो शायद आप मुझे देख पा रहे थे। सबसे पहले मुझे आप सबकसे क्षमा मांगनी है, क्योंकि मैं वहां स्वयं उपस्थित नहीं रह पाया, लेकिन यह मेरे लिए बहुत सौभाग्य का विषय होता कि सभी आचार्य भगवंतों के चरणों में बैठने का मुझे आज संभव हुआ होता। लेकिन कभी-कभार समय की ऐसी सीमाएं रहती हैं। कुछ जिम्मेदारियां भी ऐसी रहती हैं कि कुछ कामों को अत्यंत महत्वपूर्ण होने के बावजूद भी करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। मैं भले भौगोलिक दृष्टि से आप सबसे काफी दूर बैठा हूं। लेकिन हृदय से मैं पूरी तरह आपके साथ हूं और आचार्य भगवंत के चरणों में हूं। आज मुझे यह 300वें ग्रंथ के लोकार्पण का अवसर मिला। लेकिन कहीं पर लिखा गया है यह साहित्य की रचनाएं हैं। मेरा उसमें थोड़ा मतभेद है, यह साहित्य की रचनाएं नहीं हैं। एक संत का अभी यह तपस्या, आत्मानुभूति, दिव्यता का साक्षात्कार और उस पर से गंगा की तरह पवित्र जो मनोभाव है, उसे शब्द-देह मिला हुआ है। और इसलिए एक प्रकार से यह वो रचना नहीं है, जो साहित्यकारों की तपस्या का परिणाम होती है, एक यह वाणी का संपुट है, जिसमें सामाजिक के साक्षात्कार से निकली हुई पीड़ा का, संभावनाओं का और सामाजिक जीवन को कुछ देने की अदम्य इच्छा शक्ति का यह परिणाम है।

50 साल मुनी की तरह एक अविरत भ्रमण और सामान्य रूप से पूज्य महाराज साहब को सुनने के लिए हजारों लोगों की भीड़ लगी रहती हैं। उनके एक-एक शब्द को सुनने के लिए हम जैसे सभी लोग ललायित रहते हैं। लेकिन यह भी विशेषता है कि वे एक उत्तम श्रोता भी हैं। श्रावकों के साथ बात करना, यात्रा के दरमियान छोटे-छोटे लोगों से बातें सुनना, एक प्रकार से पूरे हिंदुस्तान के जीवन को अपनी इस यात्रा के दरमियान अपने भीतर समा लेने का उन्होंने एक अविरत प्रयास किया है। और उसी का परिणाम है कि उत्तम एक दिव्यता का अंश हम सबको प्राप्त हुआ है।

सामान्य रूप से संतों महंतों के लिए, आचार्य भगवंतों के लिए धार्मिक परंपराओं की बातें करना, ईश्वर के साक्षात्कार की बातें करना वक्त समूह को अच्छा लगता है, लेकिन पूज्य महाराज साहब ने इससे हट करके सिर्फ अपने श्रावकों को पसंद आ जाए, अपने भक्तजनों को पसंद आ जाए उसी बातों को कहने की बजाय, उन्होंने सामाजिक की जो कमियां हैं, व्यक्ति के जीवन के जो दोष हैं, पारिवारिक जीवन के सामने जो खरे हैं, उसके खिलाफ आक्रोश व्यक्त करते रहे हैं। कभी-कभी उनकी वाणी में चांदनी की शीतलता अनुभव होती है। तो कभी-कभी तेजाब का भी अनुभव होता है। उनके शब्दों की ताकत, कभी हमें दुविधापूर्ण मन हो, निराशा छाई हुई हो तो एक शीतलता का अनुभव कराती है, लेकिन कभी-कभी समाज में ऐसी घटनाएं हो जाती हैं, एक संत का मन विचलित हो जाता है। आक्रोश में उठता है, भीतर ज्वाला धधकती है और वाणी के रूप में वो बहने लगती है और समाज को जगाने के लिए वो अपने आप को आंदोलित कर देते हैं। यह मैंने अनुभव किया है, और इसलिए जितनी उन्होंने साम्प्रदायिक परंपराओं की सेवा की है, उससे ज्यादा समाज में सुधार की अनुभूति कराई है। और उससे भी ज्यादा उन्होंने समाज को इस बात के लिए प्रेरित किया कि हर धर्म से ऊपर अगर कोई धर्म है तो वो राष्ट्र धर्म है। वे लगातार हैं राष्ट्र धर्म जगाना, राष्ट्र की भावना जगाना यह करते रहे हैं। और कभी भी उनके प्रति आस्था में कमी नहीं आई है। हम गर्व के साथ कह सकते हैं हिंदुस्तान के पास ऐसी महान परंपरा है, ऐसे महान संत-मुनि हैं, ऋषि-मुनि हैं जिन्होंने अपनी तपस्या, अपने ज्ञान का उपयोग राष्ट्र के भाग्य को बदलने के लिए, राष्ट्र का भावी निर्माण करने के लिए अपने आप को खपाया है।

हम वो लोग हैं, जिनको शायद दुनिया जिस रूप में समझना चाहिए अभी तक समझ नहीं पाई है। भारत एक ऐसा देश है जिसने विश्व को किसी साम्प्रदायिक में बांधने का प्रयास नहीं किया है। भारत ने विश्व को न साम्प्रदाय दिया है, न साम्प्रदायिकता दी है। हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने, परंपराओं ने विश्व को साम्प्रदायिकता नहीं, अध्यात्मिकता दी है। कभी-कभी साम्प्रदायिक समस्याओं का सृजक बन जाता है, आध्यात्म समस्याओं का समाधान बन जाता है। हमारे पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हमेशा कहते थे कि समस्याओं को समाधान करने के लिए मानवजात का अध्यात्मिकरण होना

चाहिए, spiritualism होना चाहिए। जो राष्ट्र धर्म के आलेख पूज्य महाराज साहब ने अविरत रूप से जगाई है, वो आलेख उस बात से परिचित कराती है।

300 ग्रंथ यह छोटी बात नहीं है। अनेक विषय व्यक्ति से ले करके परिवार, परिवार से ले करके समाज, समाज से ले करके राज्य, राज्य से ले करके राष्ट्र, राष्ट्र से ले करके पूरी समष्टि, पूरा ब्रह्माण कोई विषय ऐसा नहीं है, जिस पर महाराज साहब ने अपने विचार न रखें हों। उन्होंने लिखना प्रारंभ किया, तब से ले करके आज देखें तो लगता है शायद महीने में.. हर महीने शायद उनकी एक किताब निकली है, तब जा करके आज 300 किताबें हुई हैं। यह बहुत बड़ा समाज को तोहफा है।

समाज में सामान्य रूप से साहित्य की रचनाएं जो होती है, वो समाज को जानने-समझने के लिए, समस्याओं को जानने-समझाने के लिए काम आती हैं। लेकिन महाराज साहब ने हमें जो दिया है, वो हमें जीने का तरीका भी सिखाया है, परिवार में संकट हो तो महाराज साहब की किताब हाथ लग गई हो, तो परिवार को संकट से बाहर निकालने का रास्ता परिवार के लोग निकालने लगते हैं। बेटा घर में कुछ गलत रास्ते पर चलने लगा हो, मां-बाप के लिए कुछ अलग ढंग से सोचने लगा हो और कहीं महाराज साहब का एक वाक्य पढ़ने को मिल गया तो उसने अपने जीवन की राह बदल दी हो और फिर से मां-बाप के पास जाकर समर्पित हो गया हो। बहुत सारा धन कमाया हो, लेकिन महाराज साहब की एक बात सुनी हो तो उसका मन बदल जाता है और उसको लगता है मैं अब आगे अपना धन समाज सेवा में समर्पित करूंगा। कोई न कोई समाज सेवा का काम करूंगा, किसी दुखियारे की मदद करने का प्रयास करूंगा। यह एक प्रकार से सामाजिक क्रांति का प्रयास है और यह प्रयास आने वाले दिनों में हम सबका प्रेरणा देता रहेगा।

मैं आज आचार्य भगवंत, रत्नसुंदरसुरिस्वर जी महाराज साहब के चरणों में प्रणाम करता हूं। जिन गुरुजनों के साथ बैठ करके एक सच्चे शिष्य के रूप में अपने जीवन को उन्होंने ढाला, वे उत्तम गुरु-शिष्य परंपरा का भी उदाहरण है। अब खुद गुरु पद पर बैठने के बाद उत्तम शिष्य परंपरा को आगे बढ़ाने का काम करके उन्होंने वो भी अपनी भूमिका निभाई है। मेरा सौभाग्य रहा है उनके आशीर्वाद प्राप्त करने का, उनके विचारों को सुनने का, उनके सुझावों को समझने का। आज मेरा सौभाग्य है कि उनके यह 300वें ग्रंथ के लोकार्पण का मुझे अवसर मिला है और यह भी भारत भक्ति का ही उनका एक प्रयास है।

मां भारती के लिए हम कैसे कुछ करें। हमारा देश गरीबी से मुक्त कैसे हो, सवा सौ करोड़ देशवासी स्वच्छ भारत के सपने को कैसे पूर्ण करें। 35 साल से कम उम्र के करोड़ों-करोड़ों लोग, ऐसे हमारे नौजवान भारत के भाग्य को बदलने के लिए बहुत बड़ी शक्ति कैसे बनें। इन सपनों को साकार करने के लिए हम सब मिल करके एक अविरत प्रयास करते रहें।

मैं आज के इस शुभ अवसर पर, इस भव्य आयोजन के लिए समिति को बधाई देता हूं, पूज्य महाराज साहब को प्रणाम करता हूं और भगवान महावीर के चरणों में प्रार्थना करता हूं कि ऐसे आचार्य भगवंतों को ऐसी आचार्य शक्ति दें, ऐसी दिव्यता दें कि आने वाली सदियों तक मानवजाति के कल्याण के लिए उनका रास्ता हमें काम आए। मैं फिर एक बार आप सबको प्रणाम करता हूं, पूज्य महाराज साहब को प्रणाम करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

केजे/एसकेपी-199

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

21-April-2016 16:41 IST

Text of PM's address at the 10th Civil Services Day awards ceremony at New Delhi

मंत्री परिषद के मेरे सहयोगी ... उपस्थित सभी महानुभाव और साथियों,

Civil Services Day देश के जीवन में भी और हम सबके जीवन में भी और विशेषकर आपके जीवन में, सार्थक कैसे बने? क्या ये ritual बनना चाहिए? हर साल एक दिवस आता है। इतिहास की धरोहर को याद करने का अवसर मिलता है। यह अवसर अपने-आप में इस बात के लिए हमें प्रेरणा दे सकता है क्या कि हम क्यों चले थे, कहाँ जाना था, कितना चले, कहाँ पहुँचे, कहीं ऐसा तो नहीं था कि जहाँ जाना था वहाँ से कहीं दूर चले गए? कहीं ऐसा तो नहीं था कि जहाँ जाना था अभी वहाँ पहुँचना बहुत दूर बाकी है? ये सारी बातें हैं जो व्यक्ति को विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। और ऐसे अवसर होते हैं जो हमें जरा पीछे मुड़ करके और उस कदमों को, उस कार्यकाल को एक critical नजर से देखने का अवसर भी देते हैं। और उसके साथ-साथ, ये अवसर ही होते हैं कि जो नए संकल्प के लिए कारण बनते हैं। और ये जीवन में हर किसी का अनुभव होता है। सिर्फ हम यहाँ बैठे हैं इसलिए ऐसा नहीं है।

एक विद्यार्थी भी जब exam दे करके घर लौटता है, एक तरफ रिजल्ट का इंतजार करता है, साथ-साथ ये भी सोचता है कि अगले साल तो प्रारंभ से ही पढ़ूँगा। निर्णय कर लेता है कि अगले साल exam के समय पढ़ना नहीं है मैं बिल्कुल प्रारंभ से पढ़ूँगा, नियमित हो जाऊँगा, ये खुद ही कहता है किसी को कहना नहीं पड़ता। क्योंकि वो परीक्षा का माहौल ऐसा रहता है कि उसका मन करता है कि अगले साल के लिए कुछ बदलाव लाऊँगा हृदय में। और जब स्कूल-कॉलेज खुल जाती हैं तो याद तो आता है कि हाँ, फिर सोचता है ऐसा करें आज रात को पढ़ने के बजाय सुबह जल्दी उठ करके पढ़ेंगे। सुबह नींद आ जाती है सोचता है कि शायद सुबह जल्दी उठ करके पढ़ना हमारे बस का रोग नहीं है। ऐसा करें रात को ही पढ़ेंगे। फिर कभी माँ को कहता है, माँ जरा जल्दी उठा देना। कभी माँ को कहता है रात को ज्यादा खाना मत खिलाओ कुछ ऐसा खिलाओ ताकि मैं पढ़ पाऊँ। तरह-तरह की चीजें खोजता रहता है। लेकिन अनुभव आता है कि प्रयोग तो बहुत होते हैं लेकिन वो ही हाल हो जाता है, फिर exam आ जाती है फिर देर रात तक पढ़ता है, फिर note एक्सचेंज करता है, फिर सोचता है कल सुबह क्या होगा? ये जीवन का एक क्रम बन जाता है। क्या हम भी उसी ritual से अपने-आपको बांधना चाहते हैं? मैं समझता हूँ कि फिर सिर्फ रुकावट आती है ऐसा नहीं है, थकावट भी आती है। और कभी-कभी रुकावट जितना संकट पैदा नहीं करती हैं उतनी थकावट पैदा करती हैं। और जिंदगी वो जी सकते हैं जो कभी थकावट महसूस नहीं करते, रुकावट को एक अवसर समझते हैं, रुकावट को चुनौती समझते हैं, वो जिंदगी को कहीं ओर ले जा सकते हैं। लेकिन जिनके जीवन में एक बार थकावट ने प्रवेश कर दिया वो किसी भी बीमारी से बड़ी भयंकर होती है, उससे कभी बाहर नहीं निकल सकता है और थकावट, थकावट कभी शरीर से नहीं होती है, थकावट मन की अवस्था होती है जो जीने की ताकत खो देती है, सपने भी देखने का सामर्थ्य छोड़ देती है और तब जा करके जीवन में कुछ भी न करना, और कभी व्यक्ति के जीवन में कुछ न होना उसके अपने तक सीमित नहीं रहता है, वो जितने बड़े पद पर बैठता है उतना ज्यादा प्रभाव पैदा करता है। कभी-कभार बहुत ऊँचे पद पर बैठा हुआ व्यक्ति कुछ कर करके जितना प्रभाव पैदा कर सकता है उससे ज्यादा प्रभाव कुछ न करके नकारात्मक पैदा कर देता है। और इसलिए मैं अच्छा कर सकूँ अच्छी बात है, न कर पाऊँ तो भी ये तो मैं संकल्प करूँ कि मुझे जितना करना था, उसमें तो कहीं थकावट नहीं आ रही है, जिसके कारण एक ठहराव तो नहीं आ गया? जिसके कारण रुकावट तो नहीं आ गई और कहीं मैं पूरी व्यवस्था को ऊर्जाहीन, चेतनाहीन, प्राणहीन, संकल्प विहीन, गति विहीन नहीं बनाए देता हूँ? अगर ये मन की अवस्था रही तो मैं समझता हूँ संकट बहुत बड़ा गहरा जाता है। और इसलिए हम लोगों के जीवन में जैसे-जैसे दायित्व बढ़ता है, हमारे अंदर नया करने ऊर्जा भी बढ़नी चाहिए। और ये अवसर होते हैं

जो हमें ताकत देते हैं।

कभी-कभार एक अच्छा विचार जितना सामर्थ्य देता है, उससे ज्यादा एक अच्छी सफलता, चाहे वो किसी और की क्यों न हो, वो हमारी हौसला बहुत बुलंद कर देती है। आज जो Award Winner हैं उनका कार्यक्षेत्र हिंदुस्तान की तुलना में बहुत छोटा होगा। इतने बड़े देश की समस्याओं के सामने एकाध चीज को उन्होंने हाथ लगाया होगा, हिसाब से लगाए तो वो बहुत छोटी होगी। लेकिन वो सफलता भी यहां बैठे हुए हर किसी को लगता होगा अच्छा, इसका ये भी परिणाम हो सकता है? अच्छा अनंतनाग में भी हो सकता है? आनंदपुर में भी हो सकता है? हर किसी के मन में विचार आंदोलित करने का काम एक सफल गाथा कर देती है।

और इसलिए Civil Services Day के साथ ये प्रधानमंत्री Award की जो परंपरा रही है उसको एक नया आयाम इस बार देने का प्रयास किया गया। कुछ Geographical कठिनाइयां हैं कुछ जनसंख्या की सीमाएं हैं। तो ऐसी विविधताओं से भरा हुआ देश है तो उसको तीन ग्रुप में कर करके कोशिश की लेकिन शायद ही किसी ने सोचा होगा कि इतनी भारी scrutiny भी हो सकती हैं सरकारी काम में। वरना तो पहले क्या था application लिख देते थे और कुछ लोगों को बहुत अच्छा रिपोर्ट बनाने का आता भी है तो jury को प्रभावित भी कर देते हैं। और इस बार प्रभावित करने वाला कोई दायरा ही नहीं था। क्योंकि call-center से सैंकड़ों फोन करके पूछा गया भई आपके यहां ये हुआ था क्या हुआ ? Jury ने physically वहां meeting की। Video Conferencing से यहीं से Viva किया गया। यानी अनेक प्रकार की कोशिश करने के बाद एक कुछ अच्छाइयों की ओर जाने का प्रयास हुआ है। लेकिन जो अच्छा होता है उसका आनंद होता है, इतनी बड़ी प्रक्रिया हुई जैसे।

लेकिन मेरे मन में एक विचार आया कि 600-650 से ज्यादा जिले हैं। हमारी चुनौती यहां शुरू होती है कि पहले से बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि करीब 74 सफलता की गाथाएं short-list हुई हैं। वो पहले से कई गुना ज्यादा है। और पहले से कई गुना ज्यादा होना, वो अपने आप में एक बहुत बड़ा समाधान का कारण है। लेकिन जिसके जीवन में थकावट नहीं है, रुकावट का वो सोच ही नहीं सकता है, वो दूसरे तरीके से सोचता है कि 650-700 जिलों में से 10% ही short-list हुए, 90% छूट गये! क्या ये 90% लोगों के लिए चुनौती बन सकती है? उस district के लिए चुनौती बन सकती है कि भले हम सफलता पाएं या न पाएं, पर short-list तक तो हम अपने जिलों को ला करके रहेंगे। अपनी पसंद की एक योजना पकड़ेंगे, इसी वर्ष से पकड़ लेंगे और उस स्टुडेंट की तरह नहीं करेंगे, आज इसी Civil Services Day को ही तय करेंगे की अगली बार इस मंच पर होंगे और हम award ले कर के जायेंगे। हिंदुस्तान के सभी 650 से भी अधिक districts के दिमाग में ये विश्वास पैदा होना चाहिए।

74 पहले की तुलना में बहुत बड़ा figure है, बहुत बड़ा प्रयास है, लेकिन अगर मैं उससे आगे जाने के लिए सोचता हूं तो मतलब यह है कि थकावट से मैं बंधन में बंधा हुआ नहीं हूं। मैं रुकावट को स्वीकार नहीं करता हूं, मैं कुछ और आगे करने के लिए चाहता हूं। यह भाव, यह संकल्प भाव इस टीम में आता है और जो लोग वीडियो कॉन्फ्रेंस पर मुझे सुन रहे हैं अभी, कार्यक्रम में, उन सब अफसर साहब, उनके भी दिमाग में भाव आएगा। वो राज्य में चर्चा करे कि क्या कारण है कि हमारा राज्य नजर नहीं आता है। उस district में भी बैठी हुई टीम भी सोचे कि क्या कारण है कि आज मेरे district का नाम नहीं चमका। एक healthy competition, क्योंकि जब से सरकार में कुछ बातों को लेकर के मैं आग्रह कर रहा हूं। उसमें मैं एक बात कहता हूं, cooperative federalism लेकिन साथ-साथ मैं कहता हूं competitive cooperative federalism राज्यों के बीच विकास की स्पर्धा हो, अच्छाई की स्पर्धा हो, good governance की स्पर्धा हो, best practices की स्पर्धा हो, values की स्पर्धा हो, integrity की स्पर्धा हो, accountability, responsibility की स्पर्धा बढ़े, minimum governance का सपना स्पर्धा के तहत आगे निकल जाने का प्रयास हो। यह जो competitive की बात है वो district में भी feel होना चाहिए। इस civil service day के लिए हम संकल्प करें कि हम भी दो कदम और जाएंगे।

दूसरी बात है, हम लोग जब civil services में आए होंगे। कुछ लोग तो परंपरागत रूप से आए होंगे, शायद family tradition रही होगी। तीन-चार पीढ़ी से इसी से गुजारा करते रहे होंगे, ऐसे कई लोग होंगे। कुछ लोगों को यह भी लगता होगा कि बाकी छोड़ो साहब, यह है एक बार अंदर पाइपलाइन में जगह बना लो। फिर तो ऐसे ही चले जाएंगे। फिर तो वक्त ही ले जाता है, हमें कहीं जाना नहीं पड़ता है। 15 साल हुए तो यहां पहुंच गए, 20 साल हो गए तो यहां पहुंच गए, 22 साल हो गए तो यहां पहुंच गए और जब बाहर निकलेंगे तो करीब-करीब तीन में से एक जगह पर तो होंगे ही होंगे। उसको निश्चित भविष्य लगता है। सत्ता है, रूतबा है तो आने का मन भी करता है और वो गलत है ऐसा मैं नहीं मानता हूं। मैं ऐसा मानने वालों में से नहीं हूं कि गलत है, लेकिन सवा सौ करोड़ देशवासियों में से कितने हैं जिनको यह सौभाग्य मिलता है। अपने परिश्रम से मिला है, अपने बलबूते पर मिला है फिर भी, यह भी तो जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य है कि सवा सौ करोड़ में से हम एक-दो हजार, पाँच हजार, दस हजार, पंद्रह हजार लोग हैं जिनको यह सौभाग्य मिला है। हम जो कुछ भी हैं। कोई एक ऐसी व्यवस्था है जिसने मुझे इन सवा सौ करोड़ के भाग्य को बदलने के लिए मौका दिया है। इतने बड़े जीवन के सौभाग्य के बाद अगर कुछ कर दिखाने का इरादा नहीं होता तो यहां पहुंचने के बाद भी किस काम का है और इसलिए तो कभी न कभी जीवन में.. मुझे बराबर याद है मैं आज से 35-40 साल पहले.. मैं तो राजनीति में बहुत देर से आया। सामाजिक जीवन में मैंने अपने आपको खपाया हुआ था। तो मैं कभी यूनिवर्सिटी के दोस्तों से गप्पे-गोष्ठी करने चला जाता था, मिलता था, उनसे बात करता था और एक बार मैंने उनसे पूछा क्या सोचा, आगे क्या करोगे? तो हर कोई बता रहा था, पढ़ाई के बाद सोचेंगे। कुछ बता रहे थे कि नहीं ये पिताजी का व्यवसाय है वहीं करूंगा। एक बार मेरा अनुभव है, एक नौजवान था, हाथ ऊपर किया, उसने कहा मैं आईएएस अफसर बनना चाहता हूं। मैंने कहा क्यों भई तेरे मन में ऐसे कैसे विचार आया? इसलिए मैंने कहा, क्योंकि वहां उनका जरा रूतबा होता है। बोले - नहीं, मुझे लगता है कि मैं आईएएस अफसर बनूंगा तो मैं कड़ियों की जिन्दगी में बदलाव ला सकता हूं, मैं कुछ अच्छा कर सकता हूं। मैंने कहा राजनीति में क्यों नहीं जाते हो, वहां से भी तुम कुछ कर सकते हो। नहीं बोले, वो तो temporary होता है। उसकी इतनी clarity थी। यह व्यवस्था में अगर मैं गया तो मैं एक लंबे अर्से तक sustainably काम कर सकता हूं।

आप उस ताकत के लोग हैं और इसलिए आप क्या कुछ नहीं कर सकते हैं वो आप भली-भांति जानते हैं। उसका अहसास कराने की आवश्यकता नहीं होती। एक समय होगा, हालात भी ऐसे रहे होंगे। व्यवस्थाएं बनानी होगी, एक सोच भी रही होगी और ज्यादातर हमारा role एक regulator का रहा है। काफी एक-दो पीढ़ी ऐसी हमारी इस परंपरा की रही होगी कि जिनका पूरा समय, शक्ति regulator के रूप में गया होता है। उसके बाद से शायद एक समय आया होगा जिनमें थोड़ा सा दायरा बदला होगा। administrator का रूप रहा होगा। administrator के साथ-साथ कुछ-कुछ controller का भी थोड़ा भाव आया होगा। उसके बाद थोड़ा कालखंड बदला होगा तो लगा होगा कि भई अब हमारी भूमिका regulator की तो रही नहीं। Administrator या controller से आगे अब एक managerial skill develop करना जरूरी हो गया है क्योंकि एक साथ कई चीजें manage करनी पड़ रही हैं।

हमारा दायित्व बदलता गया है लेकिन क्या 21वीं सदी के इस कालखंड में यहीं हमारा रूप पर्याप्त है क्या? भले ही मैं regulator से बाहर निकलकर के लोकतंत्र की spirit के अनुरूप बदलता-बदलता administrator से लेकर के managerial role पर पहुंचा हूँ। लेकिन मैं समझता हूँ कि 21वीं सदी जो पूरे वैश्विक स्पर्धा का युग है और भारत अपेक्षाओं की एक बहुत बड़ी.. एक ऐसा माहौल बनाए जहां हर किसी न किसी को कुछ करना है, हर किसी को कुछ न कुछ आगे बढ़ना है। हर किसी को कुछ न कुछ पाना भी है। कुछ लोगों को इससे डर लगता होगा। मैं इसे अवसर मानता हूँ। जब सवा सौ करोड़ देशवासियों के अंदर एक जज़बा हो कि कुछ करना है, कुछ पाना है, कुछ बनना है। वो अपने आप में देश को आगे बढ़ाने का कारण होता है। ठीक है यार, पिताजी ऐसा छोड़ कर गए अब चलो भई, क्या करने की जरूरत है, शौचालय बनाने की क्या जरूरत है। अपने माँ-बाप कहां शौचालय में, ऐसे ही गुजारा करके गए। अब वो सोच नहीं है, वो कहता है नहीं, जिन्दगी ऐसी नहीं, जिन्दगी ऐसी चाहिए। देश को बढ़ने के लिए यह अपने आप में एक बहुत बड़ा ऊर्जा तत्व है। और ऐसे समय हम administrator हो, हम controller हो, collector हो, यह sufficient नहीं है। अब समय की मांग है कि व्यवस्था से जुड़ा हुआ हर पुर्जा, छोटी से छोटी इकाई से लेकर के बड़े से बड़े पद पर बैठा हुआ व्यक्ति वो agent of

change बनना समय की मांग है। उसने अपने आप को उस रूप से प्रस्तुत करना पड़ेगा, उस रूप से करना पड़ेगा ताकि वो उसके होने मात्र से, सोचने मात्र से, करने मात्र से change का अहसास दिखाई दे और आज या तो कल दिखाई देगा, वो इंतजार होना नहीं है। हमें उस तेजी से change agent के रूप में काम करना पड़ेगा कि हम परिस्थितियों को पलटे। चाहे नीति में हो, चाहे रणनीति में हो, हमें बदलाव लाने के लिए काम करना पड़ेगा।

कभी-कभार एक ढांचे में जब बैठते हैं तब experiment करने से बहुत डरते हैं। कहीं फेल हो जाएंगे, कहीं गलत हो जाएगा। अगर हम experiment करना ही छोड़ देंगे, फिर तो व्यवस्था में बदलाव आ ही नहीं सकता है और experiment कोई circular निकाल करके नहीं होता है। एक भीतर से वो आवाज उठती है जो हमें कहीं ले जाती है और जिनको लगता है कि भई कहीं कोई risk न हो, वो experiment तो ठीक है। बिना risk के जो experiment होता है वो experiment नहीं होता है, वो तो plan होता है जी। Plan और experiment में बहुत बड़ा अंतर होता है। Plan का तो आपको पता है कि ऐसा होना है, यहां जाना है, experiment का plan थोड़ा होता है और मैं हमेशा experiment को पुरस्कृत करता हूं। ज़रा हटके। ये करने का जो कुछ लोग करते हैं और उनको एक संतोष भी होता है कि भई पहले ऐसा चलता था, मैंने ये कर दिया। उसकी एक ताकत होती है।

इतने बड़े देश को हम 20-25-30 साल या पिछली शताब्दी के सोच और नियमों से नहीं चला सकते हैं। technology ने मनुष्य जीवन को कितना बदल दिया है लेकिन technology से बदली हुई जीवन व्यवस्था, शासन व्यवस्था में अगर प्रतिबिंबित नहीं होती है तो दायरा कितना बढ़ जाएगा। और हम सबने अनुभव किया है कि योजनाएं तो आती हैं, सरकार में योजनाएं कोई नई चीजें नहीं होती हैं, लेकिन सफलता तो सरकारी दायरे से बाहर निकलकर के जन सामान्य से जोड़ने से ही मिलती हैं। यह हम सबका अनुभव है। जब भी जन भागीदारी बढ़ी है आपकी योजनाएं सफल होती हैं। इसका मतलब यह हुआ कि हमारे लिए अनिवार्य है कि अगर मैं civil servant हूं तो civil society के साथ engagement, ये मेरे लिए बहुत अनिवार्य है। मैं अपने दायरे में, अपने चैम्बर में, अपनी फाइलों के बीच देश और दुनिया को चलाना चाहता हूं, तो मुझे जन सहयोग कम मिलता है। जिनको जरूरत है वो तो इसका फायदा उठा लेंगे, आ जाएंगे लेकिन कुछ जागरूक लोगों की भलाई से देश बनता नहीं है। सामान्य मानविकी जो कि जागरूक नहीं है तो भी उसके हित की बात उस तक पहुंचती है और वो जब हिस्सेदार बन जाता है तो स्थितियां पलट जाती हैं।

और इसलिए शौचायल बनाना कोई इसी सरकार ने थोड़ी किया है। जितनी सरकारें बनी होंगी सभी सरकारों ने सोचा होगा। लेकिन वो जन आंदोलन नहीं बना। हम लोगों का काम है और सरकारी दफ्तर में बैठे हुए व्यक्तियों का भी काम है कि हम इन चीजों में, हमारी कार्यशैली में जनसामान्य, civil society से engagement, हम यह कैसे बढ़ाएं, हम उन दायरों को कैसे पकड़ें। आप देखिए, उसमें से आपको एक बहुत सरलीकरण नई चीजें भी हाथ लगेगी। और नई चीजें चीजों को करने का कारण भी बन जाती हैं और वही कभी-कभी स्वीकृति बन जाती है, नीतियों का हिस्सा बन जाती है और इसलिए हमारे लिए कोशिश रहनी चाहिए।

अब यह जरूर याद रखे कि हम.. हमारे साथ दो प्रकार के लोग हम जानते हैं भली-भांति। कुछ लोगों को पूछते हैं तो वो कहते हैं कि मैं जॉब करता हूं। कुछ लोगों को पूछते हैं तो कहते हैं कि service करता हूं। वो भी आठ घंटे यह भी आठ घंटे, वो भी तनख्वाह लेता है यह भी तनख्वाह लेता है। लेकिन वो जॉब कहता है यह service कहता है। यह फर्क जो है न, हमें कभी भूलना नहीं चाहिए, हम जॉब नहीं कर रहे हैं, हम service कर रहे हैं। यह कभी नहीं भूलना चाहिए और हम सिर्फ service शब्द से जुड़े हुए नहीं हैं, हम civil service से जुड़े हुए हैं और इसलिए हम civil society के अभिन्न अंग हैं। मैं और civil society, मैं और civil society को कुछ देने वाला, मैं और civil society के लिए कुछ करने वाला, जी नहीं! वक्त बदल चुका है। हम सब मैं और civil society, हम बनकर के चीजों को बदलेंगे। यह समय की मांग रहती है। और इसलिए मैं एक service के भाव से और जीवन में संतोष एक बात का है कि मैंने कुछ सेवा की है। देश की सेवा की है, department के द्वारा सेवा की है, उस project के द्वारा सेवा की है लेकिन सेवा ही। हमारे यहां तो कहा गया है -

सेवा परमोधर्मः। जिसकी रग-रग में इस बात की घुट्टी पिलाई गई हो कि जहां पर सेवा परमोधर्म है, आपको तो व्यवस्था के तहत सेवा का सौभाग्य मिला है और वहीं मैं समझता हूं कि एक अवसर प्रदान हुआ है।

मेरा अनुभव है। मुझे एक लंबे अरसे तक मुख्यमंत्री के नाते सेवा करने का मौका मिला। पिछले दो साल से आप लोगों के बीच बहुत कुछ सीख रहा हूं। मैं अनुभव से कह सकता हूं, बड़े विश्वास से कह सकता हूं। हमारे पास ये देव दुर्लभ टीम है, सामर्थ्यवान लोग हैं। एक-एक से बढ़कर के काम करने की ताकत रखने वाले लोग हैं। अगर उनके सामने कोई जिम्मेवारी आ जाती है तो मैंने देखा है कि वो Saturday-Sunday भी भूल जाते हैं। बच्चे का जन्मदिन तक भूल जाते हैं। ऐसे मैंने अफसर देखे हैं और इसलिए यह देश गर्व करता है कि हमारे पास ऐसे-ऐसे लोग हैं जो पद का उपयोग देश को कहीं आगे ले जाने के लिए कर रहे हैं।

अभी नीति आयोग की तरफ से एक presentation हुआ। बहुत कम लोगों को मालूम होगा। इस स्तर के अधिकारियों ने, जब उनको ये काम दिया गया और जैसा बताया गया, मैंने पहले दिन presentation दिया था और बाद में मैंने उनको समय दिया था और मैंने कहा था कि मैं आपसे फिर.. इसके light में मुझे बताइए और कुछ नया भी बताइए। और मैं आज गर्व से कह सकता हूं। कोई circular था, उसके साथ कोई discipline के बंधन नहीं थे। अपनी स्वेच्छा से करने वाला काम था और शायद हिन्दुस्तान के लोगों को जानकर के अचंभा होगा कि इन अफसरों ने 10 thousand man hour लगाए। यह छोटी घटना नहीं है और मेरी जानकारी है कि कुछ group जो बने थे, 8, 10-10, 12-12 बजे तक काम करते थे। कुछ group बने थे जिन्होंने अपना Saturday-Sunday छोड़ दिया था और नियम यह था कि office में अगर शाम को छह बजे के बाद काम करना है। शाम को office hours के बाद ten thousand hours लगाकर के यह चिंतन कर-करके यह कार्य रचना तय की गई है। इससे बड़ी घटना क्या हो सकती है जी, इससे बड़ा गर्व क्या हो सकता है? मैंने उस दिन भी कहा था और आज भी नीति आयोग की तरफ से कहा गया है कि हमें एक बहुत बड़े विद्वान, consultant जो जानकारी देते हैं। लेकिन जो 25-30 साल इसी धरती से काम करते-करते निकले हुए लोग जब सोचते हैं तो कितनी ताकतवर चीजें दे सकते हैं, उसका यह उत्तम उदाहरण है। अनुभव से निकली हुई चीज है और उसको वहां छोड़ा नहीं। यह चिंतन की chain के रूप में उसको एक बार फिर से follow up के नाते reverse gear में ले जाया गया। वो बैठे गए, वो अलग बैठा गया और उस वक्त हमने अपने-अपने department ने अपना action plan बनाया। जिस action plan का बजट के अंदर भी reflection दिखाई दे रहा था। बजट की कई बातें ऐसी हैं जो इस चिंतन में से निकली थी। Political thinking process से नहीं आई थी। यह बहुत छोटी बात नहीं है जी। इतना बड़ा involvement decision making में एक नया work culture है, नई कार्यशैली है।

मैं कभी अफसरों से निराश नहीं हुआ। इतने बड़े लंबे तजुर्बे के बाद मैं विश्वास से कहता हूं कि मैं कभी अफसरों से निराश नहीं हुआ। मेरे जीवन में कभी मुझे किसी अफसर को डांटने की नौबत नहीं आई, ऊंची आवाज में बोलने की नौबत नहीं आई है। मैं zero experience के साथ शासन व्यवस्था में आया था। मुझे पंचायत का भी अनुभव नहीं था। पहले दिन से आज तक मुझे कभी कोई कटु अनुभव नहीं आया। मैंने यह सामर्थ्य देखा है। क्यों? मैंने अपनी सोच बनाई हुई है कि हर व्यक्ति के अंदर परमात्मा ने उत्तम से उत्तम ताकत दी है। हर व्यक्ति में परमात्मा ने जहां है, वहां से ऊपर उठने का सामर्थ्य दिया है। हर व्यक्ति के अंदर परमात्मा है। एक ऐसा इरादा दिया है कि कुछ अच्छा करके जाना है। कितना ही बुरा कोई व्यक्ति क्यों न हो वो भी मन में कुछ अच्छा करके जाने के लिए सोचता है। हमारा काम यही है कि इस अच्छाई को पकड़ने का प्रयास करे और मुझे हमेशा अनुभव आया है कि जब हरेक की शक्तियों को मैं देखता हूं तो अपरमपार मुझे शक्तियों का भंडार दिखाई देता है और तभी मैं आशावादी हूं कि मेरे राष्ट्र का कल्याण सुनिश्चित है, उसको कोई रोक नहीं सकता है। इस भाव को लेकर के मैं चल पाता।

जिसके पास इतनी बढ़िया टीम हो, देश भर में फैले हुए, हर कोने में बैठे हुए लोग हो, उसे निराश होने का कारण क्या हो सकता है। उसी आशा और विश्वास के साथ, इसी टीम के भरोसे, जिन सपनों को लेकर के हम चले हैं। वक्त गया होगा,

शायद गति कम रही होगी। diversion भी आए होंगे, divisions भी आए होंगे। लेकिन उसके बावजूद भी हमारे पास जो अनुभव का सामर्थ्य है, उस अनुभव के सामर्थ्य से हम गति भी बढ़ा सकते हैं, व्याप्ति भी बढ़ा सकते हैं, output-outlay की दुनिया से बाहर निकलकर के हम outcome पर concentration भी कर सकते हैं। हम परिणाम को प्राप्त कर सकते हैं।

कभी-कभार हम senior बन जाते हैं। कभी-कभार क्या, बन ही जाते हैं, व्यवस्था ही ऐसी है। तो हमें लगता है और ये सहज प्रकृति है। पिता अपने बेटे को कितना ही प्यार क्यों न करते हो, उनको मालूम है कि उनका बेटा उनसे ज्यादा होनहार है, बहुत कुछ कर रहा है लेकिन पिता की सोच तो यही रहती है कि तेरे से मुझे ज्यादा मालूम है। हर पिता यही सोचता है कि तेरे से मैं ज्यादा जानता हूँ और इसलिए हम जो यहां बैठे हैं तो जूनियर अफसर से हम ज्यादा जानते हैं, विचार आना। वो हम जन्म से ही सीखते आए हैं। उसमें कोई आपका दोष नहीं है। मुझे भी यही होगा, आपको भी यही होगा। लेकिन जो सत्य है, अनुभव होने के बावजूद भी क्या बदलाव नहीं आ जाता। आज स्थिति ऐसी है कि पीढ़ियों का अंतर हमें अनुभव करना होगा। हम जब छोटे होंगे तब हमारी जानकारी का दायरा और समझ और आज के बच्चे में जमीन-आसमान का अंतर है। मतलब हमारे बाद जो पीढ़ी तैयार होकर के आज system में आई है। भले ही हमें इतना अनुभव नहीं होगा लेकिन हो सकता है वो ज्ञान में हमसे ज्यादा होगा। जानकारी में हमसे ज्यादा होगा। हमारी सफलता इस बात में नहीं है कि तेरे से मैं ज्यादा जानता हूँ, हमारी सफलता इस बात में है कि मेरा अनुभव और तेरा ज्ञान, मेरा अनुभव और तेरी ऊर्जा, आओ यार मिला ले, देश का कुछ कल्याण हो जाएगा। यह रास्ता हम चुन सकते हैं। आप देखिए ऊर्जा बदल जाएगी, दायरा बदल जाएगा। हमें एक नई ताकत मिलेगी।

मैं कभी-कभी कहता हूँ कि जब आप कंप्यूटर पर काम करना सीखते हैं और ऐसी दुनिया है कि अंदर उतरते-उतरते चले ही जाते हैं। Communication world इतना बड़ा है। लेकिन अगर आपकी माँ देखती है तो वो कहती है, अच्छा बेटा! तुझे इतना सारा आ गया, बहुत सीख लिया तूने। लेकिन अगर आपका भतीजा देखता है तो कहता है क्या अंकल आपको इतना भी नहीं आता। यह तो छोटे बच्चों को आता है, आपको नहीं आता है। इतना बड़ा फर्क है। एक ही घर में तीन पीढ़ी है तो ऊपर एक अनुभव आएगा और नीचे दूसरा अनुभव आएगा। क्या हम सीनियर होने के नाते इस बदली हुई सच्चाई को स्वीकार कर सकते हैं क्या? हमारे पास वो नहीं है जो आज नई पीढ़ी के पास है, तो मानना पड़ेगा। उसके सोचने के तरीके बदल गए हैं। जानकारियां पाने के उसके रास्ते अलग हैं। एक चीज को खोजने के लिए आप घंटों तक ढूँढते रहते हैं यार क्या हुआ था। वो पल भर में यूँ लेकर के आ जाता है कि नहीं-नहीं साहब ऐसा था।

हमारे लिए यह सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम Civil Services Day पर यह संकल्प करे कि नई पीढ़ी जो हमारी व्यवस्था में आई है, से एक दम जूनियर अफसर होंगे, उनके पास हमसे कुछ ज्यादा है। उसको अवसर देने के लिए मैं अपना मन बना सकता हूँ। उसको मैं मेरे अंदर internalize करने के लिए कुछ व्यवस्था कर सकता हूँ? आप देखिए आपके department की ताकत बहुत बदल जाएगी, बहुत बदल जाएगी। आपने जो निर्णय किए हैं उस निर्णयों को आप बड़ी, बहुत उत्सव के साथ, उमंग के साथ भरपूर कर पाएंगे।

और भी एक बात है, सारी समस्याओं की जड़ में है Contradiction and conflict, ये इरादतन नहीं आए हैं, कुल मिला करके हमारी कार्यशैली जो विकसित हुई है उसने हमें यहां ला करके छोड़ा है। Simple word में कोई कह देते हैं कि silo में काम करने का तरीका। कुछ लोगों के लिए silo में काम करना Performance के रूप में ठीक हो जाता है, कर लेता है। लेकिन इससे परिणाम नहीं मिलता है। अकेले जितना करे, उससे ज्यादा टीम से बहुत परिणाम मिलता है, बहुत परिणाम मिलता है। टीम की ताकत बहुत होती है। कंधे से कंधा मिला करके जैसे department की सफलताएं साथियों के साथ करना जरूरी है, वैसे राष्ट्र के निर्माण के लिए department to department कंधे से कंधे मिलना बहुत जरूरी है। अगर silo न होता तो अदालतों में हमारी सरकार के इतने cases न होते। एक department दूसरे department के साथ Supreme Court में लड़ रहा है, क्यों। इस department को लगता है मेरा सही है, दूसरे department को लगता है मेरा

सही है, अब Supreme Court तय करेगी ये दोनों departments ठीक हैं कि नहीं हैं। ये इसलिए नहीं हुआ कि कोई किसी को परास्त करना चाहता था, वहां बैठा हुआ अफसर को किसी से झगड़ा था, क्योंकि ये केस चलता हो गया, चार अफसर उसके बाद तो बदल चुके होंगे। लेकिन क्योंकि silo में काम करने के कारण और को समझने का अवसर नहीं मिलता है। पिछले दिनों जो ये ग्रुप बना, इसका सबसे बड़ा फायदा ये हुआ है, उस department के अफसर उसमें नहीं थे, और जो अफसर मुझे मिले मैं उनसे पूछता था, मैं सिर्फ बातों को ऐसे official तरीके से काम करना मुझे आता भी नहीं है। भगवान बचाए, मुझे सीखना भी नहीं है। लेकिन मैं बातें भोजन के लिए सब अफसरों के साथ बैठता था, मैं उसमें बड़ा आग्रह रखता था कि मेरे टेबल पर कौन आए हैं। मैं सुझाव देता था और फिर मैं उनको पूछता था ये तो ठीक है आपने रिपोर्ट-विपोर्ट बनाया। लेकिन आप बैठते थे तो क्या लगता? अधिकतम लोगों ने ये कहा कि साहब हम एक batch mate रहे हैं लेकिन सालों से अलग-अलग काम करते पता ही नहीं था कि मेरे batch mate में इतना ताकत है इतना talent है। बोले तो ये बैठे तो पता चला। हमें पता भी नहीं था कि मेरे इस साथी में इस प्रकार की extra ordinary energy है। बोले साथ बैठे तो पता चला। हमें ये भी पता नहीं कि था कि उसको समोसा पसंद है कि पकौड़ा पसंद है। साथ बैठे तो पता चला कि उसको समोसा पसंद है तो हम अगली मीटिंग में कहते कि यार तुम उसके लिए समोसा ले आना। चीजें छोटी होती हैं, लेकिन टीम बनाने के लिए बहुत आवश्यक होती हैं।

ये दायरो को तोड़ करके, बंधनों को छोड़ करके, टीम के रूप में बैठते हैं तो ताकत बहुत बन जाती हैं। कभी-कभार department में एक से ज्यादा जोड़ दें तो दो हो जाते हैं लेकिन एक department एक के साथ एक मिल जाता है तो ग्यारह हो जाते हैं। टीम की अपनी ताकत है, आप अकेले खाने के लिए खाने बैठे हैं तो कोई आग्रह करेगा तो एकाध दो रोटी ज्यादा खाएंगे लेकिन छह दोस्त खाना खा रहे हैं तो पता तक नहीं चलता तीन-चार रोटी ऐसे ही पेट में चली जाती हैं, टीम का एक माहौल होता है। आवश्यकता है कि हमें टीम के रूप में silo से बाहर निकल करके समस्या हैं तो अपने साथी को सीधा फोन करके क्यों न पूछें। उसके चैम्बर में क्यों न चले जाएं। वो मेरे से जूनियर होगा तो भी चले जाओ अरे भाई क्या बात है फाइल तुम्हारे यहां सात दिन से आई है, तुम देखो जरा noting करते हो तो जरा ये चीजें ध्यान रखो।

आप देखिए चीजें गति बन जाएगी। और इसलिए reform to transform, ये जो मैं मंत्र ले करके चल रहा हूं, लेकिन ये बात सही है कि reform से transform होता है, ऐसा नहीं है। Reform to perform to transform, perform वाली बात जब तक हमारे, और वो हमारे बस में है। और इसलिए हम लोगों के लिए, हम वो लोग हैं जिनके लिए Reform to perform to transform, ये perform करना हमारे लिए, मैं नहीं मानता हूं आज vision में कोई कमी है, दिशा में कोई कमी है। दो साल हुए इस सरकार की किसी नीति गलत होने का अभी तक कोई आरोप नहीं लगा है। किसी ने उस पर कोई ये चुनौती नहीं की है, ज्यादा से ज्यादा ये हुआ भई गति तेज नहीं है, कोई ये शिकायत करता है। कोई कहता है impact नहीं आ रहा है। कोई कहता है परिणाम नहीं दिखता है। कोई ये नहीं कहता है गलत कर रहे हो। मतलब ये हुआ कि जो आलोचना होती है उस आलोचना को गले लगा करके हमने perform को हम कैसे बढ़ोतरी बना सकें ताकि हमारा transform संकल्प है, वो पूरा हो सके।

Reform कोई कठिन काम नहीं है, कठिन अगर है तो perform है। और perform हो गया तो transform के लिए कोई नाप पट्टी ले करके बैठना नहीं पड़ता है, अपने-आप नजर आता है यहां transformation हो रहा है। और मैं देख रहा हूं कि बदलाव आ रहा है। आज समय-सीमा में सरकार काम करने की आदत बनी है। हर चीज मोबाइल फोन पर, app पर monitor होने लगी है। ये अपने-आप में अच्छी चीजें आपने स्वीकार की हैं, ये थोपी नहीं गई हैं। Department ने खुद ने तय किया है, इतने दिन में ये करेंगे, इतने दिन में करेंगे। हम इतनी solar energy करेंगे, हम इतना पानी पहुंचाएंगे, हम इतनी बिजली पहुंचाएंगे, हम इतने जन-धन एकाउंट खोलेंगे, आपने तय किया है, आप पर थोपा नहीं गया है।

और जो आपने तय किया है वो भी इतना ताकतवार है, इतना प्रेरक है कि मैं मानता हूं देश को कोई कमी नहीं रह सकती है, हम perform करके दिखा दें बस। और मुझे विश्वास है कि ऐसी टीम मिलना बहुत मुश्किल होता है। मैं बहुत

भाग्यशाली हूँ कि मुझे ऐसी अनुभवी ऐसी टीम मिली है। देश भर में फैले हुए ऊर्जावान नौजवान व्यवस्था में आ रहे हैं। वे भी पूरी ताकत से कर रहे हैं। हर किसी को लगता है गांव के जीवन को बदलना है।

पिछली बार मैंने आप सबों से कहा था कि बहुत साल हो गए होंगे तो एक बारी जहां पहले duty किया था वहां हो आइए न क्या हुआ। और सभी अफसर गए हैं और उनका जो अनुभव हैं बड़े प्रेरक हैं। कुछ नहीं कहना पड़ा, वो देख करके आया कि मैं आज से 30 साल पर जहां पहली job की थी, पहली बार मेरी duty लगी थी, आज 30 साल के बाद वहां गया, मैं तो बहुत बदल चुका, कहां से कहां पहुंच गया, लेकिन जिन्हें छोड़ करके आया था वहीं का वहीं रह गया। ये सोच अपने-आप में मुझे कुछ कर गुजरने की ताकत दे देती है। किसी के भाषण की जरूरत नहीं पड़ती है, किसी किताब से कोई सुवाक्यों की जरूरत नहीं पड़ती है, अपने-आप प्रेरणा मिलती है। ये ही तो जगह है, 30 साल पहले मैं इसी गांव में रहा था? इसी दफ्तर में रहा था? ये ही लोगों का हाल था? मैं वहां पहुंच गया, वो यहीं रह गए, मेरी तो यात्रा चल पड़ी उनकी नहीं चल पड़ी। ये सोच अगर मन में रहती है, उन लोगों को याद कीजिए जहां से आपने अपने carrier की शुरुआत की थी। उस इलाके को याद करिए, उन लोगों को याद कीजिए, आप देखिए आपको लगेगा कि अब तो निवृत्ति का समय भले ही दो, चार, पांच साल में आने वाला हो लेकिन कुछ करके जाना है। ये कुछ करके जाना है, वो ही तो सबसे बड़ी ताकत आती है और वो ही तो देश को एक नई शक्ति देती है। और मुझे विश्वास है इस टीम के द्वारा और वैश्विक परिवेश में काम करना है। अब हम न department silo में रह सकता है न देश silo में रह सकता है। Inter-dependent world बन चुका है। और इसलिए हम लोगों को उसमें अपने-आपको भी जोड़ना पड़ेगा। हर बदलती हुई परिस्थिति को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए, अवसर में पलटते हुए काम करने का संकल्प करें।

मनरेगा में इतना पैसा जाता है। मैं जानता हूँ सूखे की स्थिति है, पानी की कमी है, लेकिन ये भी तो है कि अगला वर्ष अच्छी वर्षा का वर्ष आ रहा है, ऐसा अनुमान किया गया है तो मेरे पास अप्रैल, मई, जून जितना भी समय बचा है, क्या मैं मनरेगा के पैसों से जल संचय का एक सफल अभियान चला सकता हूँ? अगर आज पानी संचय की मेरी इतनी व्यवस्था है तो desilting करके, नए तालाब खोद करके, नए canal साफ कर-करके, मैं पूरी व्यवस्था से इस शक्ति का उपयोग जल संचय में करूँ, हो सकता है बारिश कम भी आ जाए तो भी गुजारा करने के लिए काम आ आती है। मैं मानता हूँ कि बहुत बड़ी ताकत है और जन भागीदारी से सब संभव है, सब संभव है। इन चीजों को हम करने का संकल्प ले करके चलें।

जिन जिलों ने ये जो सफलता पाई उन जिलों की टीमों को मैं हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और मैं देश भर के जिलों के अधिकारियों से आग्रह करूंगा कि अब जिले की हर टीम ने कहीं न कहीं participation करना चाहिए। कुछ ही लोग participation करें ऐसा नहीं, आप भी इस competition में आइए, आप भी अपने जिले में सपनों के अनुकूल कोई चीज कर करके जाने का संकल्प करें। इसी एक अपेक्षा के साथ आप सबको Civil Services Day पर हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। आपने जो किया है देश उसके लिए गर्व करता है, आप बहुत कुछ कर पाएंगे, देश सीना तान करके आगे बढ़ेगा, इस विश्वास के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/ निर्मल शर्मा/ मनीषा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-नवंबर-2016 19:51 IST

नई दिल्ली में रामनाथ गोयनका अवार्ड्स के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

सभी वरिष्ठ महानुभाव,

आज जिन लोगों को Award प्राप्त हुआ है, उन सबको मेरी तरफ से बहुत - बहुत बधाई। और बहुत से लोग होंगे जो शायद Award तक नहीं पहुंचे होंगे लेकिन बहुत करीब होंगे। मैं उनको भी बधाई देता हूं। ताकि ये सिलसिला चलता रहे। हर किसी की कलम, हर किसी की सोच और उसकी मेहनत देश को आगे बढ़ाने में किसी न किसी प्रकार से योगदान देती रहे।

बहुत लोग होते हैं जो अपने जीवनकाल में अपने क्षेत्र में जगह बनाते हैं। कुछ लोग होते हैं, जो अपने जीवनकाल में अपने कार्य क्षेत्र से भी बाहर अपनी जगह बनाते हैं। लेकिन बहुत कम लोग होते हैं, जो अपने जीवनकाल के बाद भी अपने क्षेत्र में, अपने क्षेत्र की परिधी में अपना स्थान बनाते हैं अमरत्व को प्राप्त करते हैं। और वो नाम है रामनाथ गोयनका जी का।

ये मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे रामनाथ जी के दर्शन करने का अवसर मिला था। वे गुजरात आए थे। अब वो जिस स्थान पर थे, तो स्वाभाविक है कि उनके मिलने का दायरा किसी पोलिटिकल पार्टी के अध्यक्ष हो सकते हैं या मुख्यमंत्री हो सकते हैं या मीडिया को लगा हो कि भविष्य में ये बड़े एडिटर हो सकते हैं। मैं कुछ भी नहीं था। शायद वो शहर के किसी एडिटर से मैं टाइम मांगता वो भी महीने भर नहीं देता। लेकिन रामनाथ जी के दर्शन का मुझे सौभाग्य मिला था। जयप्रकाश जी के आंदोलन का वो काल था। और रामनाथ जी के भीतर जो आग थी। वो आग अनुभव कर सकते थे। और वो इंडियन एक्सप्रेस एक अखबार और उसके लिए थी ऐसा नहीं था। उनको जो अखबार के माध्यम से अभिव्यक्त होता था, उससे भी संतोष नहीं होता था। उनकी भावनाओं के लिए अखबार भी छोटा पड़ता था। और इसलिये वो अखबार की परिधी के बाहर भी कुछ करना चाहते थे और करते रहते थे। और जयप्रकाश जी के पीछे एक ताकत बनकर खड़े रहने का काम उस समय किसी ने किया तो गोयनका जी ने किया था। अपने उसूलों के इतने पक्के रहे इस हद में रहे की जिस परिवार के संबंध में सब लोग जानते हैं। उनके साथ अगर निकट संबंध हो तो पता नहीं कहां से कहां व्यक्ति वो पहुंच जाता है। क्या कुछ पा लेता है। उस परिवार के कृपा के लिए कोशिश करने वालों की कोई कमी नहीं रही। उसूलों के आधार इस परिवार के साथ निकटता थी। लेकिन उसूलों के आधार पर परिवार से नाता तोड़ने का साहस किसी ने दिखाया था तो श्रीमान गोयनका जी ने दिखाया था और उसूलों पर और आदर्शों पर।

और इसलिये पत्रकारिता कलम के माध्यम से जो प्रकट होता है। जो दूसरे दिन अखबार में जो लोग पढ़ते हैं। वहां तक सीमित नहीं रही। और भारत का पूरा इतिहास देखें, मुझे मालूम नहीं कि आज journalism के student के syllabus क्या - क्या होता है। लेकिन अगर हम भारत की पत्रकारिता के इतिहास को हम देखें। उसकी पूरी विकास यात्रा आजादी के आंदोलन की विकास यात्रा से जुड़ी हुई थी। इस देश का आजादी का कोई आंदोलन ऐसा नहीं था, जो किसी न किसी अखबार से जुड़ा हुआ न हो। और हर किसी को लगता था कि अंग्रेज सलतनत के खिलाफ लड़ना है, तो मेरे पास ये भी एक साधन है, वो लड़ते थे। और ज्यादातर पत्रकारिता के क्षेत्र के द्वारा सेवा के भाव से देश के आजादी के आंदोलन को चलाने वाले लोगों को कई वर्षों तक जेलों में जिन्दगी काटनी पड़ी। लेकिन उन्होंने लड़ना नहीं छोड़ा। और हमारे देश के हर बड़े व्यक्ति का नाम चाहे तिलक जी लें, गांधी जी लें, हर किसी का नाम, even श्री अरविन्दो, हर कोई अपने जीवन के कालखंड में अखबार के माध्यम से आजादी के आंदोलन में बहुत बड़ी ताकत बनकर रहे। हिन्दुस्तान की एक और विशेषता हम अनुभव करते हैं कि हमारे जो माता सरस्वती की संतान हैं। कविता जिनकी सहज होती है, साहित्य जिनके सृजन और सहज होता है। मां सरस्वती उनके आशीर्वाद उनके विराजमान रहते हैं। लेकिन एक कालखंड था कि भारत के करीब करीब सभी बड़े साहित्यकार पत्रकारिता से जुड़ना पसंद करते थे। और पत्रकारिता सीखा नहीं जाता है। वो कविता से भाव को जगाते थे। लेकिन पत्रकारिता से जो जोश भरते थे, आंदोलन के लिए प्रेरित करते थे। कविता की ताकत से ज्यादा उनको उस समय पत्रकारिता की ताकत की अनुभूति होती थी। और इससे कविता का मार्ग अपने आनन्द के लिए। लेकिन राष्ट्र कल्याण के लिए पत्रकारिता का मार्ग ये साहित्यिक जीवन की पूरी पीढ़ी हमारे लिये पड़ी है। यानी एक प्रकार से भारत की यात्रा है। और अंग्रेज सलतनत ने भी जो संकट के लिए कुछ क्षेत्र देखे थे। उसमें एक क्षेत्र था। ये लिखने पढ़ने वाले लोग।

और उनको लगता था कि ये है तो उनके खिलाफ कोई न कोई व्यवस्थाएं करनी चाहिए लड़ाई करनी चाहिए।

देश आजाद हुआ। आजादी के बाद भारत के लोकतंत्र को मजबूत बनाने में, लोकतंत्र सही दिशा में चले उसके लिए भारत की पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है। किसी की आलोचना के लिए नहीं। किसी को बुरा भला कहने के लिए नहीं। लेकिन हम जानते हैं कि मान लीजिये कोई बड़ा epidemic आ गया। बीमारी आ गई कोई, तो हर कोई पहले वाली बड़ी बीमारी को याद करता है कोई उस समय ऐसा हुआ था। क्योंकि From Known to Unknown जाना सरल होता है। और इसीलिये लोकतंत्र पर क्या खतरे हो सकते हैं और कैसे महत्व रखते हैं। इसको समझने के लिए भारत में Emergency का काल बहुत उपयोगी है। अगर Emergency की बात कहते हैं तो लोगों को बुरा लगता है। उसको राजनीतिक तराजू से देखा जाता है। मैं समझता हूं राजनीतिक का खेल समाप्त हो चुका है। आज निष्पक्ष भाव से उसकी विमानसा में आलोचना शब्द उपयोग नहीं कर रहा विमानसा शब्द का उपयोग कर रहा हूं। ये हर पीढ़ी में होते रहने चाहिए ताकि इस देश में ऐसा राजपुरुष पैदा न हो कि जिसको इस प्रकार का पाप करने की इच्छा तक पैदा हो। ये हमलोगों को हम जिस बिरादरी के लोग हैं उनको बार - बार चौकन्ना रखने के लिए भी आपात्काल याद रखवाना बहुत जरूरी है। ये भी सही है कि उस समय जिस मीडिया से दुनिया डटी थी ऐसे कहते हैं। जब मीडिया की सामर्थ्य की चर्चा होती थी। लेकिन उस कालखंड ने दिखा दिया था कि नहीं ये जो सुनते थे देखते थे ऐसा नहीं है कुछ और है। बहुत कम विरले निकले थे, बहुत कम। जिन्होंने आपात्काल को चुनौती देने का रास्ता चुना था। और उसका नेतृत्व रामनाथ गोयनका जी ने किया था, इंडियन एक्सप्रेस ने किया था और बहुत बेफिक्र हो कर किया था। मैं समझता हूं कि ये इतिहास के पन्ने लोकतंत्र की आवश्यकता के लिए आवश्यक है। लोकतंत्र को हर समय हर युग में sharpen करने की आवश्यकता होती है।

आज अपनी-अपनी जगह पर मैं समझता हूं शायद पिछली पूरी शताब्दी में मीडिया को जो चुनौतियां नहीं थीं। वो चुनौतियां आज हैं। शायद पिछली पूरी शताब्दी में किसी नहीं रही। और उस मूल कारण टेक्नॉलॉजी है। टेक्नॉलॉजी ने बहुत बड़ी चुनौती खासकर के मीडिया के लिए पैदा की है। पहले खबरें 24 घंटे के बाद भी आती थी तो भी खबरें खबर लगती थी। आज 24 सैंकेंड भी बीत जाए अच्छा - अच्छा तुझे पता नहीं है। अरे ऐसा हो गया, उसके हाथ में टेलीफोन में मोबाइल फोन में है। दुनिया के किसी कोने का पता होता है कि हां ये कब आया है। मैं नहीं मानता हूं। जब टीवी मीडिया आया, तो सरकारें बड़ी परेशान थीं कि एक जगह पर टीवी पर खबर आ जाए। सरकार को response time चाहिए। मनो epidemic आया तो लोगों को मोबलाइज़ करना होगा कहीं कोई दंगा हो गया तो पुलिस को भेजना होगा। मीडिया उतना टाइम नहीं देता है। उसके लिए तो खबर - खबर है। breaking news। क्या मालूम, नहीं। लेकिन उसको भी cop-up करने के लिए सरकार का सामर्थ्य नहीं बना उसके पहले सोशल मीडिया आ गया जो fraction of Seconds..... पहले पत्रकारिता कोई पढ़ाई लिखाई करके आए हुए लोग किसी व्यवस्था में जुड़े हुए लोग आज कुछ नहीं साहब गांव का आदमी भी उसको ठीक लगा फोटो निकाल देता है, तक देता है। और इसके कारण लोगों के पास खबरें बहुत होती हैं। और इसको इस स्थिति में Credibility बहुत बात है। आदतन रोज सुबह लोग अखबार उठाते हैं। ये आदत है चाय पीने की जैसा आदत होती है ऐसी आदत है। वो कितना ही टीवी पर खबर देखते हैं लेकिन एक बार तो पेपर उठा ही लेते हैं। लेकिन अब खबर पढ़ता नहीं है, वो Verify करता है कि कल मोबाइल में देखा था वो आ रहा है कि दूसरा है। और फिर वो हिसाब लगाता है कि अच्छा है भाई चलीए दो रुपये गया आजका और इसलिये मैं समझता हूं चुनौती बहुत बड़ी है। और इस चुनौती को हम कैसे cop-up करेंगे। लेकिन इसके साथ-साथ हमें अनुभव भी आता है कि देश में कैसी कैसी टैलेंट है कैसी-कैसी संवेदनाओं से भरा हुआ मानव समूह है। हर छोटी चीज को कितनी बारीकी से वो Analysis करके देखता है।

मुझे बराबर याद है। मैं गुजरात का सीएम था, तो कभी - कभी नेता लोगों की बात तो अखबार में छपते रहते थे। हर किसी की छपती है साल एक बार किसी एक बार तो किसी की दो बार ये छपती है। ये VIP Culture इतना गाड़ियां लेकर के जाते हैं, ठिकना-फलाना बहुत बड़ा interesting विषय रहता है और कुछ खबर नहीं हो तो ready-made तो मिली ही जाती है। हम भी पढ़ते थे। मैं भी हमारे अफसरों से कहता था कि क्या यार, ये क्या चीज लेकर के चलते हो। बोले नहीं साहब ये Blue Book में लिखा हुआ है, हम भी उसको Compromise नहीं कर सकते। हम भी उनको समझा नहीं पा रहे थे। लेकिन एक बार मैं जब अहमदाबाद से, मेरा convoy गुजर रहा था शाम का समय था। किसी नौजवान ने अपने मोबाइल में recording शुरू किया। और जैसे गाड़ियां जा रही थी, एक दो तीन गिनता रहता था गाड़ियां जा रही थी। और उसको upload किया। मैं खुद सोशल मीडिया में बड़ा active था तो मुझे दो तीन घंटों में मेरे पास गया वो। अखबारों में आलोचना होकर के जितना प्रभाव हुआ था उससे ज्यादा मुझे हुआ था। एक नौजवान ने जो upload किया था उसका प्रभाव हुआ था। मैं अपनी बात इसलिये बताता हूं कि कितनी ताकत हो गई है इसकी। Empowerment of people अच्छी चीज है। और ऐसे समय Credibility इसको बनाए रखना ये मैं समझता हूं समय की बड़ी मांग है।

दो चीजें ऐसी हैं, वैसे ये ऐसा वर्ग है और ये क्षेत्र ऐसा है जिसको सबको कहने का हक है। किसी को उनको कहने का कोई हक नहीं है। और कह दिया तो फिर क्या होगा। वो मैं भी जानता हूं आप भी भली भांति जानते हैं। वैसे मैं मीडिया का जीवन भर शुक्रगुजार रहूंगा, वरना मुझे कौन जानता था। आजादी के बाद अगर किसी भी राजनेता को ऐसा सौभाग्य मिला

हो तो मैं अकेला हूँ। इसलिये दो चीजें हमेशा मेरे मन में रहती हैं। और मैं चाहूंगा कि कोई सोचे। देखिये, दुनिया बदल चुकी है। सिर्फ Economy Globalize हो ऐसा नहीं पूरी जिन्दगी Globalize हो चुकी है। पूरी दुनिया inter-connected है Inter-dependent है। क्या कारण है कि पूरी दुनिया का जो Media World है उसमें भारतीय मूल का कोई स्थान नहीं है। आज भी कुछ लोग मिलते हैं। अरे मैंने BBC में सुना अब अलजजीरा तक पहुंचा है मामला CNN, BBC, अलजजीरा। इस field के लोगों ने इस चुनौती को समझना चाहिए। भारतीय मूल का एक विश्व स्तर का और हम दुनिया में अगर player हैं, तो हमारे हर पहलु का प्रभाव विश्व में पैदा होना चाहिए सपना होना चाहिए, किसी को बुरा लगे या न लगे मुझे नहीं लगता है। मुझे लगता है मेरे देश का प्रभाव होना ही चाहिए। हमारे यहां पर बहुत ताकत है जैसे मैंने अभी Environment पर Award मिला था मैंने विवेक को पूछा। मैंने कहा विवेक ये Pollution पर reporting है कि Environment पर है। ऐसे मैं मजाक में पूछ रहा था।

आज पूरी दुनिया को Global Warming और Environment की चर्चा करती है। भारत की रंगों में प्राकृति के साथ जीना कैसे, प्राकृति का महत्वमय क्या है, प्राकृति के सामर्थ्य को स्वीकार करना ये हमारी रंगों में है। अगर हमारे पास इस लेवल को कोई मीडिया होता तो विश्व को समझा देते कि बर्बादी का कारण आप हैं बचाने के लिए हमने अपने आपको बर्बाद किया है। हमने अपने आपको नुकसान दिया है। ये तो महात्मा गांधी साबरमती के तट पर रहते थे। नदी उस समय तो पानी भरा रहता था 1930s में। लेकिन साथ गांधी जी को पानी ग्लास देता था वो कहते थे की भाई आधा लाओ, आधा उस मटके में वापस डालो, पानी बर्बाद मत करो। नदी बह रही नदी के किनारे पर बैठे थे। प्राकृतिक संसाधनों की चर्चा ये हमारी रंगों में है। ये देश ऐसा है जो बचपन में बच्चों को सिखाता है कि बेटे बिस्तर से पैर नीचे रखते हो पृथ्वी मां की क्षमा मांगो कि तुम अपना पैर पृथ्वी पर रख रहे हो। ये हमारे संस्कार मां कितनी पढ़ी लिखी हो बच्चे को कहती है ये सूरज है तेरा दादा है ये चांद है तेरा मामा है, पूरा ब्रह्माण्ड तेरा परिवार है। ये हमारे यहां रंगों में भरा गया है। क्यों न हम दुनिया को Global Warming से बचाने के लिए हमारे पास पत्रकारिता की वो ताकत हो हमारे पास कोई Global Institution, हो के हम दुनिया को कहें कि भई रास्ता यही है। लेकिन ये बहुत मुश्किल है। उस दिशा में हम कुछ कर सकते हैं क्या।

और मैं मानता हूँ कि शायद कोई न कोई तो निकलेगा और ये सरकारी नहीं होना चाहिए। सरकार तो बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। और जैसे विनोबा जी कह रहे थे कि हमेशा जो मंत्र मुझे वैसा अच्छा लगा। विनोबा जी शब्दों के खेल खेलने में बड़े माहिर थे। और मुझे बहुत अच्छा लगता था विनोबा जी को पढ़ना। उन्होंने एक जगह पर लिखा था अ-सरकारी- असरकारी शब्द वही है, अ-सरकारी-असरकारी (Effective), ऐसा हमारा एक सपना होना चाहिए कि दुनिया में हम भी उस level के Media World में जगह होनी चाहिए। और शायद जो Media World जो लोग research करते होंगे उनको मालूम होगा, दुनिया के जो सभी Top Countries हैं वे आजकल के काम में लगे हुए हैं Finance, Budget, व्यवस्था करते हुए कि इस level की communication agencies कैसे तैयार हो। सरकारों की सरकारें लगी हुई हैं। हरेक को लगता है कि भई ये Globalised Economy, सिर्फ नहीं है ये सारी दुनिया इस प्रकार से shape रही है। उसमें हमारा दिखना बहुत जरूरी है। एक अवसर भी है चुनौती भी है। उस पर हमें सोचना चाहिए।

दूसरा सरकारों की आलोचना जितनी हो उतनी ज्यादा अच्छी है, तो उसमें मुझे कोई problem नहीं है। तो कोई reporting में गलती मत करना। लेकिन भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है। विशेषताओं से भरा हुआ देश है। देश की एकता आपके लिए खबर है और छपने के तुरंत बाद आप दूसरी खबर की खोज में लगे हो। लेकिन कभी-कभी वो ऐसे गहरे घाव देती है। इसका मतलब ये नहीं है कि ये पाप और लोग नहीं करते हो सकता है कि आप लोगों से ज्यादा हम करते हैं, हमारे बिरादरी वाले। लेकिन ये चिंता का विषय है कि हम देश की एकता को बढ़ाने वाले चीजों पर बल कैसे दें। मैं उदाहरण देता हूँ। और मैं गलत हूँ तो यहां पर काफी लोग ऐसे बैठे हैं कि अभी तो नहीं कहेंगे, लेकिन महीने के बाद कहेंगे। पहले कोई accident होता था तो खबर आती थी कि फलाने गांव में accident हुआ एक truck और साइकल में, साइकल वाला injure हो गया, expire हो गया। धीरे-धीरे बदलाव आया। बदलाव ये आया फलाने गांव में दिन में rash driving के द्वारा, शराब पिया हुआ ड्राइवर, निर्दोष आदमी को कुचल दिया। धीरे - धीरे रिपोर्टिंग बदला। बीएमडब्ल्यू कार ने एक दलित को कुचल दिया। सर मुझे क्षमा करना वो बीएमडब्ल्यू वाले कार को मालूम नहीं था कि वो दलित थे जी। लेकिन हम आग लगा देते थे। Accidental reporting होना चाहिए होना चाहिए? होना चाहिए। अगर हैडलाइन बनाने जैसा है तो हैडलाइन बना दो।

बजट आता है बजट का reporting क्या करना है कि भई सरकार का बजट आया deficit है या नहीं है। दो हजार करोड़ का टैक्स लगाया, हजार करोड़ का लगाया। ये न्यूज है। लेकिन हमें न्यूज नहीं पढ़ने को मिला। न्यूज मिलता है मोदी सरकार का कमरतोड़ बजट! मोदी सरकार का उत्तर प्रदेश चुनाव को ध्यान में रखकर के बजट! खैर ये बातें तो आप भी समझते हैं मैं भी समझता हूँ। लेकिन ये कोई आलोचना के लिए नहीं है। हमारे लिये बहुत आवश्यक है।

इतने बड़े देश को सरकारों से नहीं चलता है जी। जितनी संस्थाएं देश को एकजुट रख सकती हैं। जितनी संस्थाएं देश को आगे बढ़ा सकती हैं। हम सब मिलकर करेंगे। कोई कारण नहीं है। हमारा देश पीछे रह सकता है। कोई कारण नहीं है दुनिया को हम कुछ दे नहीं सकते। और ऐसे नौजवान जिन्होंने पत्रकारिता को अपना धर्म मानकर के उत्तम से उत्तम प्रकार से अपने जीवन की शुरुआत की है। उनको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। और उनसे प्रेरणा पाकर के नई पीढ़ी भी तैयार होगी। उनको भी मेरी शुभ कामनाएं हैं। भाई विवेक ने मुझे बुलाया। परिवारजनों के साथ मेरा नाता बहुत पुराना है। लेकिन आज इस अवसर पर आने का सौभाग्य मिला। मैं परिवार को बहुत - बहुत आभारी हूं। धन्यवाद।

अतुल तिवारी/अमित कुमार/शौकत अली